सितम्बर–अक्टूबर 2019

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगे

बाल पत्रिका

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 शतरंज

6 सही तरीका

उड़ान

7 आँधी तूफान / खुल गई पोल

8 मालन की सब्जी

9 कूकर के नीचे

10 जंगल का मंत्री

11 हिरन का बच्चा

12 सीढ़ी टूट गई

13 जंगल के लोग बहुत अच्छे हैं

ज्ञान विज्ञान

14 रेबिज

16 **कलाकारी**
शांति के पक्षी

18 **बात लै चीत ले**
कान्या मान्या

21 **माथापच्ची**

22 **हीहीही–ठीठीठी**

23 **कुछ हमने बढ़ायी, कुछ तुम बढ़ाओ**

अंकिता,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–तिरंगा

सम्पादन : विष्णु गोपाल
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : सुरेश चंद
वितरण : जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र–चेतराम, उम्र–9 वर्ष, समूह–झरना
वर्ष 10 अंक 111–112

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड व एच.टी. पारेख फाउण्डेशन के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

परिचय

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

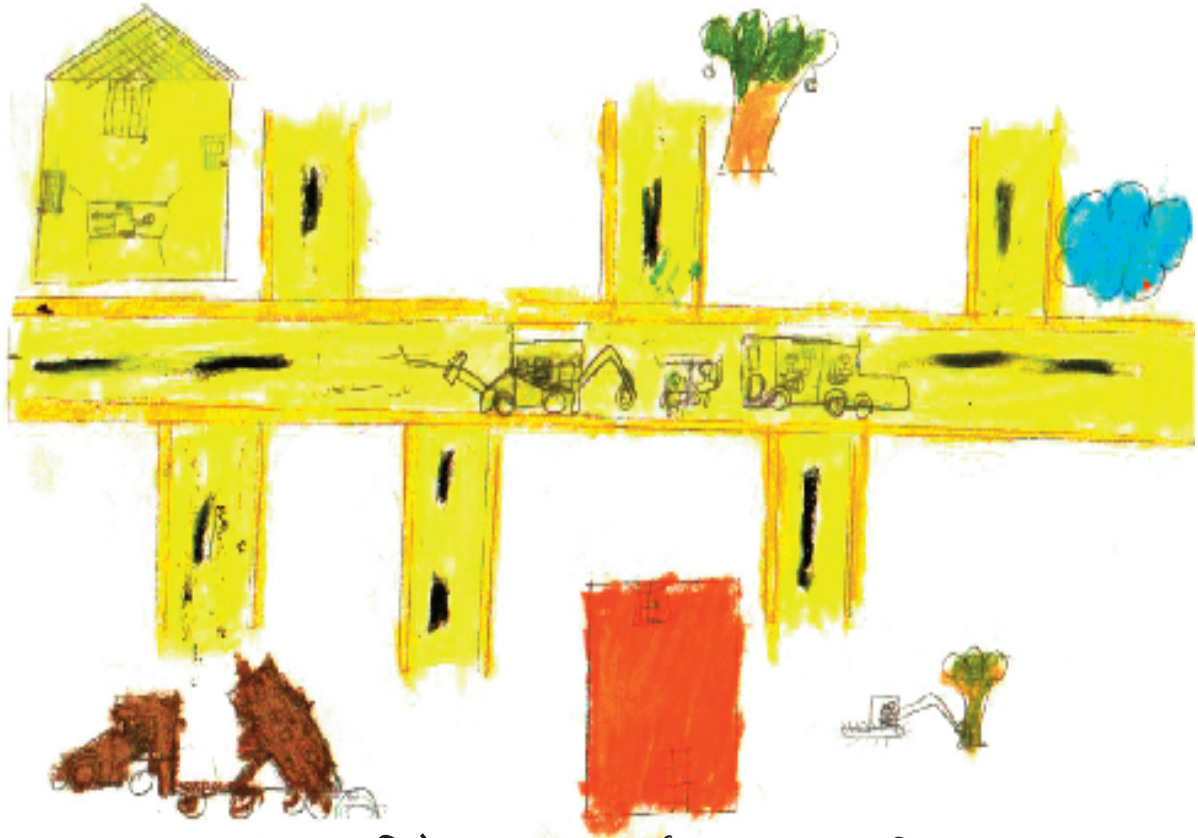

विजेन्द्र, उम्र–10 वर्ष, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरूआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरूआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरूआत की गई। ये तीनों उदय पा. ठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानव. रों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है। जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुंचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

शतरंज

उदय सामुदायिक पाठशाला कटार में बच्चों को बहुत तरह के खेल खिलाये जाते हैं। जैसे–फुटबॉल, कबड्डी, खो–खो, हैण्डबॉल, एथलेट्क्स, केरम आदि। कुछ दिनों पहले मैंने विद्यालय में राजेश गुरुजी एवं पृथ्वीराज गुरूजी को शतरंज खेलते हुए देखा। इस खेल को मैंने पहली बार किसी को खेलते हुए देखा था। मेरे मन में इस खेल को सीखने की इच्छा हुई। मैं भी पृथ्वीराज गुरुजी के पास जाकर बैठ गया और उन्हें खेल खेलते हुए देखने लगा। फिर कई बार इस तरह मैं शतरंज

कीमत, उम्र–11 वर्ष, समूह–सागर

खेलते हुए शिक्षकों के पास जाकर बैठ जाता और शतरंज खेल को समझने का प्रयास करता।

एक दिन मैंने पृथ्वीराज गुरुजी से कहा, '' हमें भी शतरंज का खेल खेलना सिखाओ।'' उन्होंने हमारे समूह में आकर सभी बच्चों को शतरंज का खेल खेलना सिखाया। मैं भी शतरंज का खेल खेलना सीख गया। पर जब मैं बड़े बच्चों के साथ शतरंज खेलता तो मैं हमेशा हार जाता। एक दिन मैं पृथ्वीराज गुरुजी के साथ शतरंज खेला तो मैं उनसे शतरंज में हार गया। परन्तु मुझे खेलने में बहुत मजा आया।

अजय नायक, समूह–सूरज, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

सही तरीका

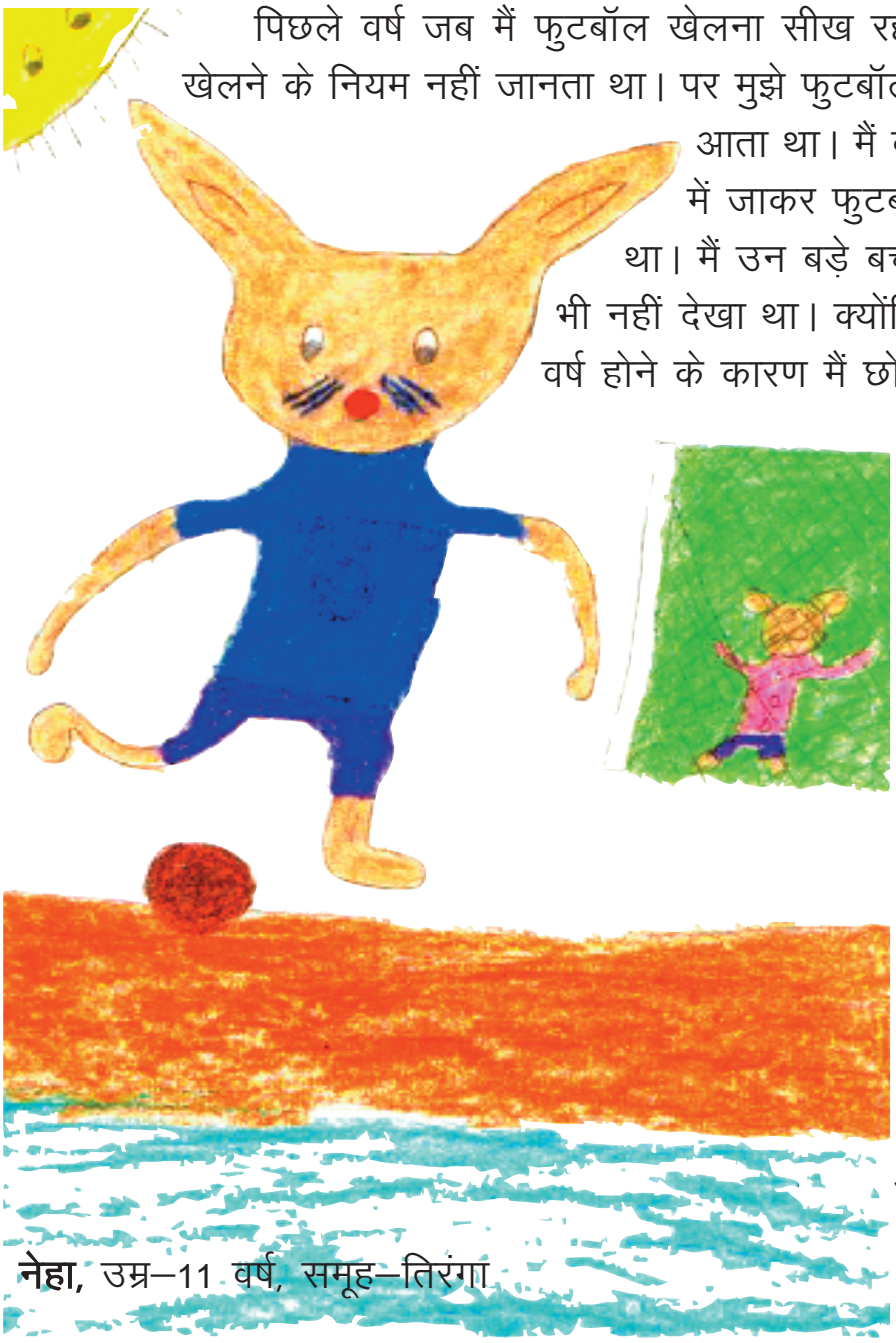

नेहा, उम्र–11 वर्ष, समूह–तिरंगा

पिछले वर्ष जब मैं फुटबॉल खेलना सीख रहा था तब मैं फुटबॉल खेलने के नियम नहीं जानता था। पर मुझे फुटबॉल खेलने में बहुत मजा आता था। मैं बड़े–बड़े बच्चों के बीच में जाकर फुटबॉल के लात मार देता था। मैं उन बड़े बच्चों के बीच में दिखाई भी नहीं देखा था। क्योंकि मेरी उम्र लगभग 7 वर्ष होने के कारण मैं छोटा था। परन्तु मैं रोज थोड़ी देर फुटबॉल जरूर खेलता था। एक दिन जब मैंने फुटबॉल के लात मारी तो मेरे दाहिने पैर में चोट लग गई और मैं वहीं बैठ गया। थोड़ी ही देर में सभी बच्चे मेरे पास आ गये। मेरे पैर में मौच आने के कारण सूजन आ गई थी। कुछ बच्चों ने मेरे पैर की अंगुलियों को आगे–पीछे करके एक्सरसाईज की। मेरे पैर पर ओमनी जेल लगाई जिसके कारण दर्द कुछ कम हुआ। उस दिन मुझे मालूम हुआ कि फुटबॉल के पैर से मारने का भी एक तरीका होता है। नहीं तो पैर में चोट लग जाती है। उसके बाद से मैं फुटबॉल को सही तरीके से मारता हूँ जिसके कारण मेरे पैर में आज तक चोट नहीं आई। मैं खूब फुटबॉल खेलता हूँ और दूसरों को भी सिखाता हूँ।

पवन बैरवा, समूह–सूरज, उम्र–10 वर्ष

आँधी–तूफान

हवा चले तूफान आये
धूल भरी आँधी आये
घर–घर में मिट्टी छाये
आँख खुजलाते राहगीरों से
पक्षी तक टकरा जाये
साफ–सुथरे मैदानों के
कौनों में कचरा जम जाये
घर बारों में जब धूल भरे
आसमान कहीं नजर न आये
धूल भरी हल्की फुआरों से
जब जल की बौछारें पड़ जाये
मिले सुकुन तब हमें
मौसम शीतल बन जाये।

राजेश कुमावत, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार।

पवन गुर्जर, उम्र–12 वर्ष, समूह–सागर

रिंकु मीना, उम्र–13 वर्ष, समूह–तिरंगा

खुल गई पोल

काली कोयल गाती है।
मीठे बोल सुनाती है।
काला कौआ इतराता।
घूम घूम कर शान दिखाता।
कौए का निकला जब बोल।
खुल गई उसकी सारी पोल।

मीनाक्षी मीना,
उम्र–11 वर्ष,
समूह–संगम

मालन की सब्जी

मालन आई सब्जी लाई।
आलू संग टमाटर लाई।
सब को हेला देती आई।
मालन ताजा सब्जी लाई।
सभी लुगायाँ भागी आई।
उधर से बोला कालू नाई।
देखो मालन सब्जी लाई।
काका की आँखें चकराई।
आज अच्छी सब्जी बनाई।

मनखुश, महेन्द्र, बुद्धिप्रकाश, अन्तिमा
समूह–सागर

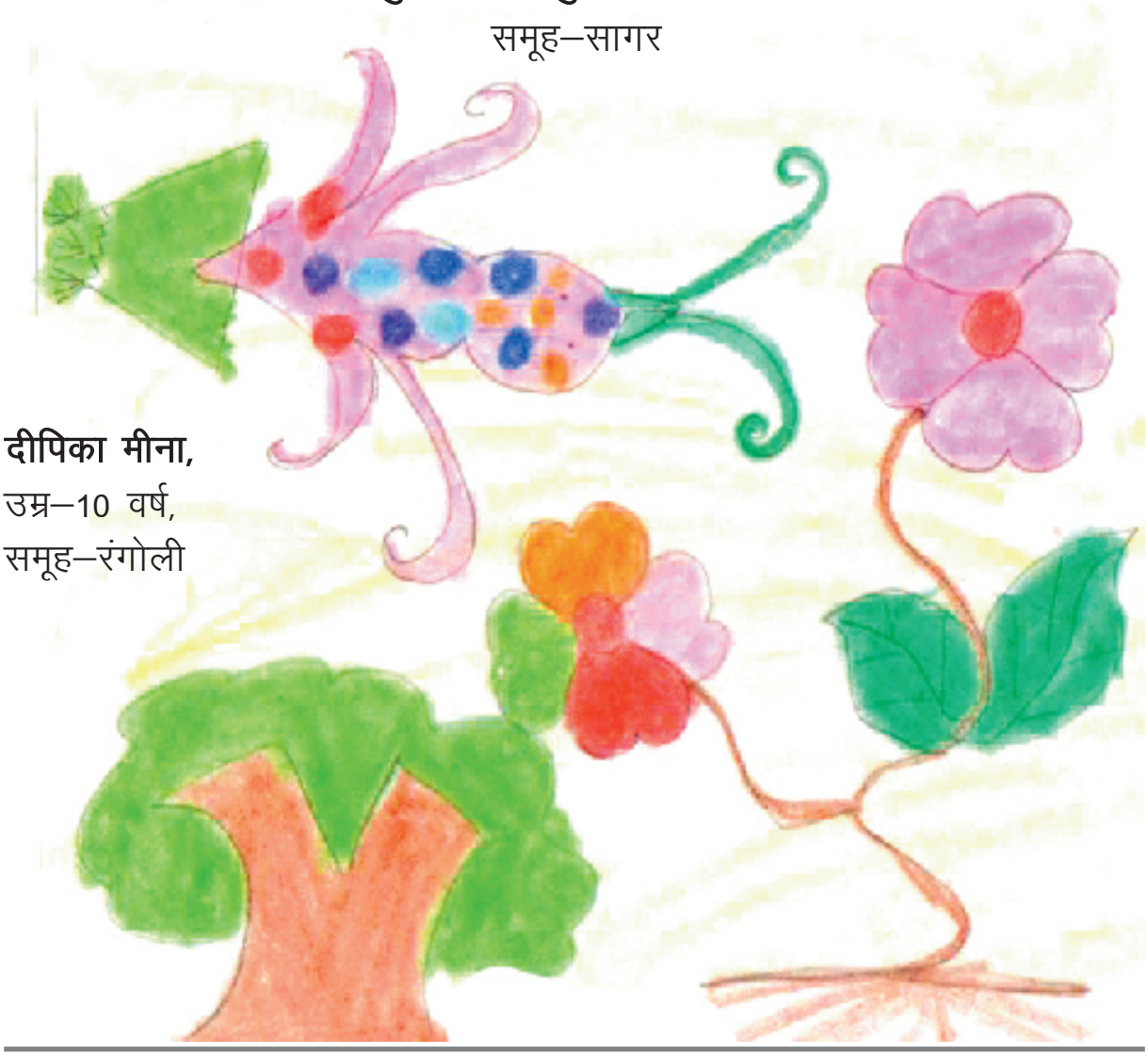

दीपिका मीना,
उम्र–10 वर्ष,
समूह–रंगोली

कूलर के नीचे

एक कबूतरी कूलर के नीचे,
घौंसला बनाये और सोचे बार–बार।
दूंगी अण्डे मैं दो चार,
खूब करूंगी मैं उनको प्यार।
एक दिन वो समय आया,
उस वक्त उसका दिल घबराया।
उसने दिये अण्डे दो,
देख–रेख में खो गई वो।
अण्डे के भीतर सोते–सोते,
बच्चे ने सीखे उड़ने के गुर,
बाहर निकलते ही हो गये फुर्र।

जीवनेन्द्र सिंह बेस, शिक्षक,
उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा।

जसकौर मीना, कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

जंगल का मंत्री

एक गाँव था। उस गाँव के पास एक जंगल था। उस जंगल में सभी पशु–पक्षी रहते थे। उनमें एक शेर भी रहता था। वह शेर जंगल के जानवरों को नहीं खाता था और गाँव की भैंस–गायों को खा जाता था। जंगल के वे सभी जानवर एक बड़ी गुफा में रहते थे।

एक दिन शेर को कहीं भी भोजन नहीं मिला तो वह जानवरों की गुफा में आया और बोला, ''आज मुझे भोजन नहीं मिला। तुम सब जाओ और मेरे लिए भोजन की

पपीता मीना, कक्षा–5, उदय सामुदायिक पाठशाला, जगनपुरा

व्यवस्था करो।'' उन जानवरों में से हिरण, खरगोश, सियार और लोमड़ी खड़े हुए। शेर ने कहा, ''तुम चारों अलग–अलग दिशा में जाओ और तुम में से जिस जानवर को भोजन मिलेगा मैं उसी को अपना मंत्री बना दूंगा। वे चारों चले गये। हिरण, लोमड़ी और सियार पूरे जंगल में घूमे परन्तु उन्हें कुछ भी नहीं मिला। वे वापस आ गये। खरगोश को एक बकरी मिली। वह उस बकरी को अपनी बातों में फंसाकर चालाकी से शेर के पास ले आया। पहले तो शेर ने बकरी का भोजन किया फिर बोला, ''देखो इतना सा जानवर मेरे लिए भोजन ले आया और इतने बड़े–बड़े जानवर मेरे लिए भोजन नहीं ला पाये।'' शेर ने फिर कहा, ''आज से खरगोश ही इस जंगल का मंत्री है।'' सभी जानवर इस बात पर बहुत खुश हुए।

मनकुश गुर्जर, समूह–सागर, उम्र–11 वर्ष

सीढ़ी टूट गई

रात का समय था। मेरे पापा और मैं खेत पर रखवाली करने गये थे। पापा बोला कि बेटी तू मचान के नीचे ही रूक मैं ऊपर जाकर बिस्तर बिछाता हूँ। मेरे पापा मचान पर चढ़कर ऊपर बिस्तर बिछाने लगे तो मचान की सीढ़ी टूट गई और मेरे पापा मचान से नीचे गिर गये। मैंने भागकर उनको उठाया। उन्होंने मुझे उठाने से मना कर दिया और कहा, '' मुझे थोड़ी देर आराम करने दो।'' मैंने उन्हें सहारा दिया।

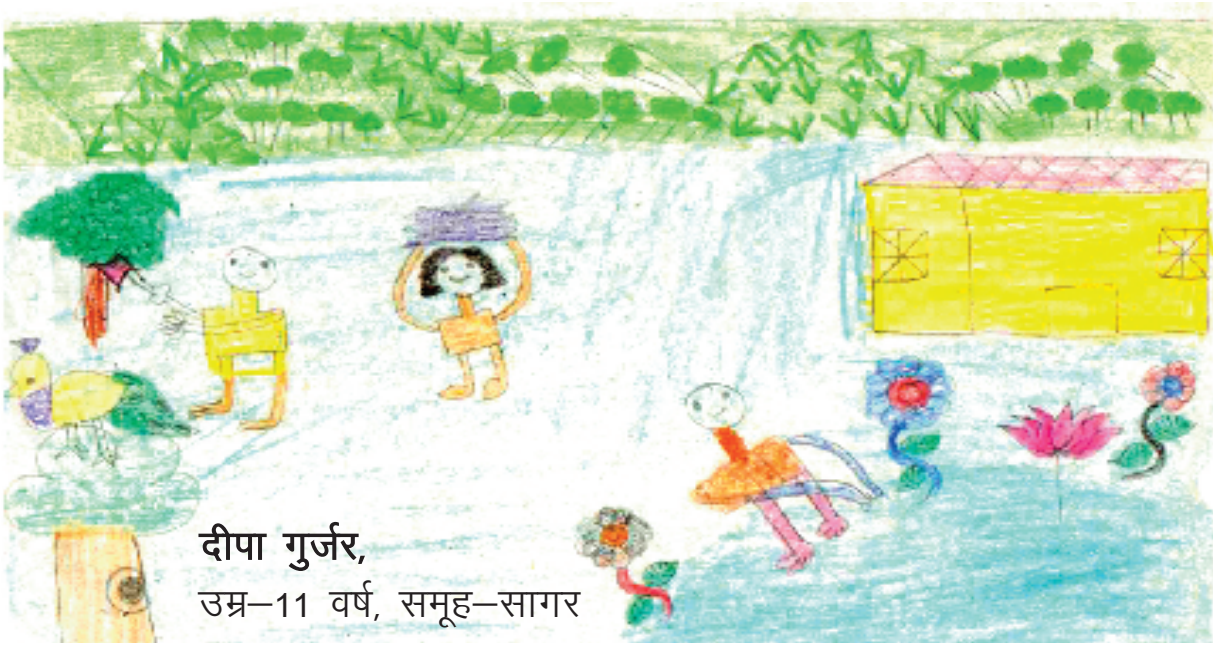

दीपा गुर्जर,
उम्र–11 वर्ष, समूह–सागर

पापा को चारपाई पर सुलाया। फिर मैंने मेरे पापा के फोन से बड़े पापा के पास फोन किया और घटना की जानकारी दी। उसके बाद बड़े पापा और भैया बाइक लेकर वहाँ आ गए।

हम दोनों को बाइक से घर ले आए और मेरे पापा की चोट पर बर्फ से सिक. ाई की व दर्द की गोली भी दी। धीरे–धीरे मेरे पापा को दर्द में आराम मिला। दूसरे दिन सुबह मेरे बड़े पापा मेरे पापा को बाइक से रणथम्भौर सेविका अस्पताल में ले गये। वहाँ पर डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने डिजिटल एक्सरे करवाने के लिए कहा। एक्सरा करवाया फिर एक्सरा डॉक्टर को दिखाया तो डॉक्टर ने कहा कि माँस में फ्रेक्चर हो गया है। 15 दिन की दवाई दी और 20 दिन का बेड रेस्ट बताया। उसके बाद धीरे–धीरे मेरे पापा ठीक हो गये। फिर वे हॉटल में काम करने जाने लगे और हम सब खुश रहने लगे।

मनीषा सैनी, उम्र–10 वर्ष, समूह–रंगोली

हिरण का बच्चा

एक जंगल था। उस जंगल में बहुत सारे जानवर रहते थे। खरगोश, बंदर, हिरण और शेर आदि। एक दिन शेर को बहुत ही जोर से भूख लग रही थी। भोजन की तलाश में शेर इधर–उधर घूम रहा था। अचानक उसे एक हिरण का बच्चा दिखाई दिया। शेर को देखकर हिरण का बच्चा तेजी से दौड़ा। हिरण के

मनीषा सैनी, कक्षा–6, उदय सामुदायिक पाठशाला, जगनपुरा

शेर को यदि बहुत सारे हिरणों के बारे में बताया तो उसका मन ललचा जायेगा और वह मुझे छोड़ देगा। हिरण के बच्चे ने शेर से कहा, ''मैं तो छोटा–सा हूँ। मुझको खाने से आपका पेट भी नहीं भरेगा। उधर पेड़ के नीचे बहुत सारे हिरणों का झुण्ड है।''

शेर ने यह सुना तो उसका मन ललचा गया। उसने हिरण के बच्चे को छोड़ दिया। शेर उस पेड़ की ओर दौड़ा तो उसको कुछ भी नहीं मिला। उधर हिरण का बच्चा उसकी माँ के पास जा पहुँचा।

उसकी माँ ने कहा, ''बेटे तुमने इतनी देर कैसे कर दी?'' तो हिरण के बच्चे ने अपनी माँ को सारी बात बताई। उसकी माँ घबरा गई। उसे शेर का भय था कि कहीं शेर हमारे घर पर नहीं आ जाये। हिरन का एक बैल दोस्त था। वह अपने बच्चे को वहाँ छोड़ आई और सारी बात उसने बैल को बताई।

बैल ने कहा, ''बहन किसी बात की चिन्ता मत करो। अब आपका बच्चा मेरे पास ही रहेगा।'' हिरन खुशी–खुशी वापस अपने घर लोट आई।

मनखुष, महेन्द्र, बुद्धिप्रकाष, अन्तिमा, समूह–सागर, उदय गिरिराजपुरा

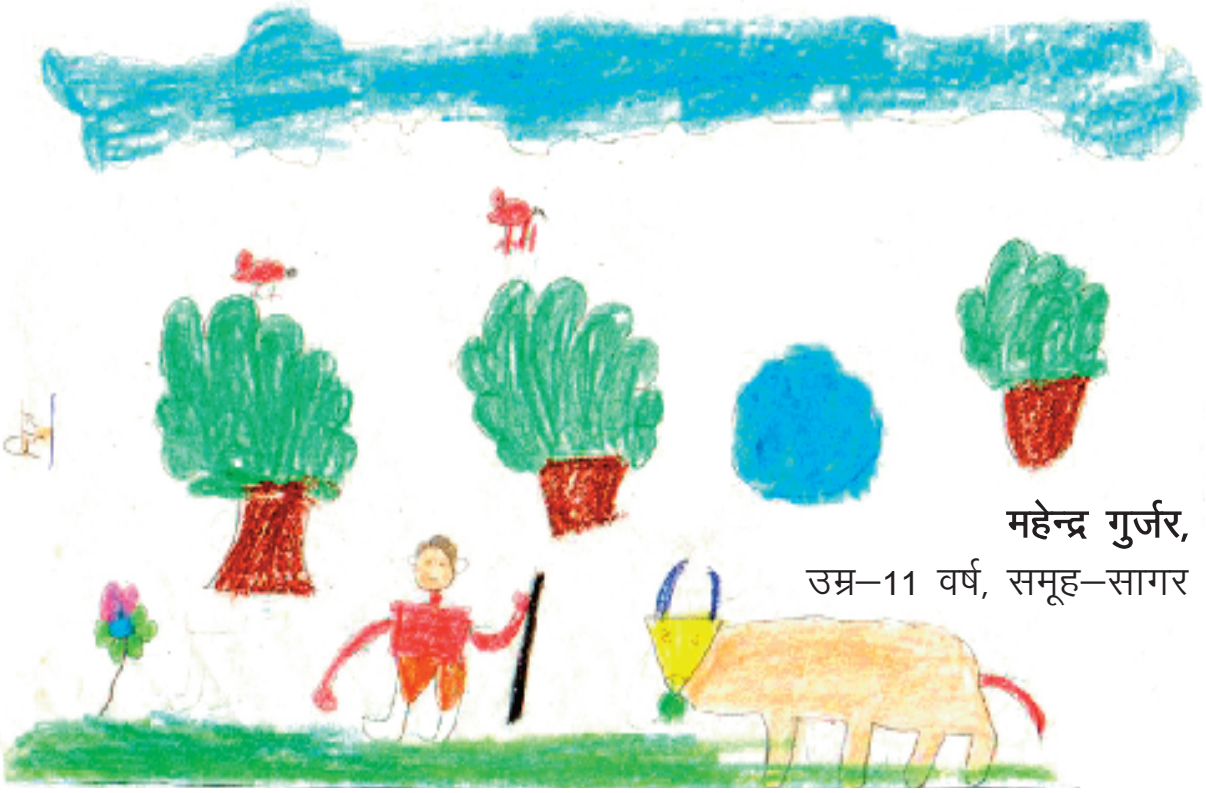

महेन्द्र गुर्जर,
उम्र–11 वर्ष, समूह–सागर

जंगल के लोग बहुत अच्छे हैं

एक बार एक घना जंगल था। उस जंगल के अंदर ही एक गाँव भी था। गाँव के सभी लोग गरीब थे। वे जंगल में अपने जानवरों को चराते एवं जंगल से लकड़ी लाकर बेचते थे। वे लोग जंगल के जानवरों को नुकसान नहीं पहुँचाते थे। एक बार एक आदमी जंगल में लकड़ी लेने गया तो वह जंगल में रास्ता भटक गया। उसे वहीं शाम हो गई। वह सोच ही रहा था कि यदि कोई जानवर आ जायेगा तो मुझे खा जायेगा। इतने में ही वहाँ एक शेर आ गया।

शेर बोला, ''डरो मत, मैं तुम्हें नहीं खाऊंगा। क्योंकि तुम लोग भी हमें नुकसान नहीं पहुँचाते हो बल्कि शिकारियों और बाहरी लोगों से हमारी सुरक्षा भी करते हो। मैं केवल जंगली जानवरों को ही खाता हूँ। तुम मेरे दोस्त की तरह ही हो। तुम भी इस जंगल में रहते हो और हम भी इसी जंगल में रहते हैं। यह जंगल ही हमारा घर है। जब कोई बाहरी व्यक्ति आकर हमें परेशान करता है तो हमें गुस्सा आ जाता है और हम उन्हें खा जाते हैं। तुम जंगल में रहने वाले लोग बहुत अच्छे हो।''

शेर की बात सुनकर वह आदमी अपने घर आ गया और उसने अपने घरवालों को सारी बात बताई।

सफेदी बाई गुर्जर, उम्र–11 वर्ष, समूह–सागर

रेबीज

एक दिन सुबह–सुबह भोला के घर से कुछ–कुछ रोने–चिल्लाने की आवाजें आ रही थी। उठ कर देखा तो वहाँ पर बहुत से लोगों का जमावड़ा लगा हुआ था। मैंने अपनी शाल उठाई और ओढ़कर भोला के घर की तरफ चल दिया। भोला का घर मेरे घर से दो खेत पार करने जितना ही दूर था। रास्ते में अजीब–अजीब ख्याल आ रहे थे। आखिर भोला मेरा दोस्त जो था। मुझे लगा कि कहीं उसकी मम्मी का स्वर्गवास तो नहीं हो गया। क्योंकि वह कुछ माह से बीमार अवस्था में थी।

मीनाक्षी मीना, कक्षा–5,
उदय सामुदायिक पाठशाला, जगनपुरा

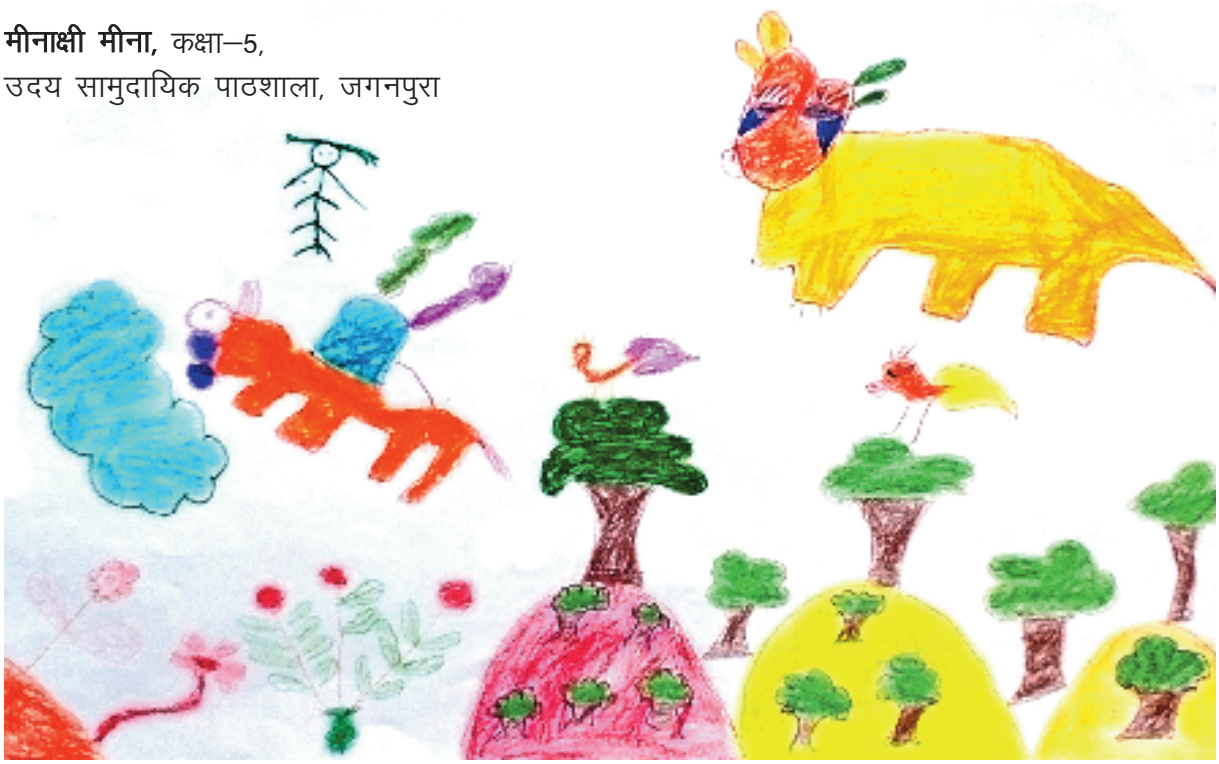

बहुत से लोग जो इकट्ठा हो रहे थे, मैं उनके बीच में घुस गया। उस समय मैं कक्षा आठ का विद्यार्थी था तथा भोला भी मेरे साथ ही पढ़ता था। वहाँ बबूल के पेड़ के तने से भोला की घोड़ी बंधी हुई थी। वैसे तो रोज वह उसी पेड़ से बंधी हुई दिखती थी लेकिन आज का दृश्य कुछ अजीब ही था। घोड़ी की हरकतों में काफी बदलाव था। वह बार–बार बिदक रही थी और अपने मुँह से बार–बार खुद को काट रही थी। जिससे घोड़ी के पूरे शरीर में खुद के काटने से घाव हो गये थे। उन घावों में से खून चमचमा रहा था। घोड़ी पेड़ के चारों और चक्कर लगाती तो रस्सा कस जाता और वह उछलती, तड़पती हुई कप–कपा जाती थी। वह पेड़

से वापस घुमती तो रस्सा पेड़ से गोल–गोल खुलता जाता तो घोड़ी पेड़ से दूर हो जाती जिससे लोग भी तितर–बितर हो जा रहे थे। सभी के मन में डर था कि कहीं इसका रस्सा टूट ना जाये। घोड़ी के मुँह से लार टपक रही थी। हिन–हिनाते हुए खुद को काटना बंद नहीं हुआ। बगल में लोगों को बात करते हुए सुना की रात के दो बजे से ही घोड़ी ऐसा कर रही है। जो अभी और ज्यादा दिखाई दे रहा है। एक व्यक्ति बोला, ''तीन महिने पहले इसे एक कुत्ते ने काट लिया था। फिर इसे किसी देवता के लेकर गये थे। तब वह ठीक हो गई थी। उस समय तो केवल हल्का सा घाव था। जो दो–पाँच दिनों में भर गया।''

दूसरे व्यक्ति ने कहा, ''मामला यह है कि घोड़ी कुत्ते के काटने पर ही पागल हुई है। अगर इसे डॉक्टर को दिखाते और इलाज करवाते तो शायद आज इसकी यह हालत नहीं होती।'' इस दृश्य को देखकर मन में दुःख भरी बैचेनी सी हुई। भोला के तो हाल ही बेहाल थे। रो–रो कर बुरा हाल था। पूरी रात से ऐसे ही रो रहा था। आँसू रूकने का नाम ही नहीं ले रहे थे। उसे लगातार सांत्वनायें दी जा रही थी। पूरा परिवार उदासी और गमगीन माहौल में था।

भोला कुछ ज्यादा ही सदमें था और हो भी क्यों नहीं उसकी देख–रेख वही करता था। दो–तीन बार तो भोला ने मुझे भी घोड़ी पर बिठाया। जब वह चराने निकल जाता तो मैं भी कभी–कभार उसके साथ निकल जाया करता था। मैंने कुत्ते के काटने के बारे में पढ़ा और सुना भी था। यदि कोई कुत्ता इंसान को काट ले तो साबुन या डिटॉल से धोकर कोई भी जिवाणु रोधक क्रीम लगाकर डॉक्टर को दिखाकर ईलाज करवाना चाहिए। गाँवों में कुछ लोग प्राथमिक उपचार के नाम पर चूना भी लगाते हैं। इसी को लगाकर घाव भरने भर को ही पूर्ण इलाज मानने की गलती कर बैठते हैं। जबकि सच तो यह है कि कुत्ते के काटने पर उस कुत्ते पर भी नजर रखनी चाहिए। कुत्ते की हरकतों को देखना भी होता है। दस दिनों के अंदर यदि कुत्ते में पागल होने के संकेत आते हैं या वह मर जाता है तो यह गंभीर बात है। क्योंकि इससे पता चलता है कि कुत्ता पागल है। पागल कुत्ते के काटने पर तो तुरंत पूरा इलाज करवाना चाहिए। कुत्ते की लार में रेबीज के विषाणु पाये जाते हैं। किसी इंसान/जानवर को काटने पर रेबीज के विषाणु उसके शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। जो कभी भी सक्रिय हो सकते हैं। कुत्ते के काटने में असावधानी बरतना रेबीज को दावत देना है। जिसका सही मायने में अर्थ है मौत। यह कुत्ते से किसी इंसान में ही नहीं किसी जानवर में भी संचारित हो जाती है। जैसे की भोला की घोड़ी के साथ हुआ।

राजेश कुमावत, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

शांति के पक्षी

अमरीका ने दूसरे महायुद्ध के दौरान पहला एटम बम जापान में हिरोशिमा पर गिराया था। सादाको उस समय केवल दो साल की थी। वह क्योंकि हिरोशिमा से एक मील दूर थी, इसलिए उसे कुछ नहीं हुआ। परंतु इस विभिषिका में करीब दो लाख लोग मरे। हिरोशिमा के पुनर्निमाण के बाद सादाको स्कूल जाने लगी। वह अब ग्यारह साल की हो गई थी।

अशोक सैनी, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

एक दिन जब वह स्कूल की रेस के लिए दौड़ रही थी। तो उसका सिर चक्कर खाने लगा और वह गिर गई। उसे तुरंत अस्पताल ले जाया गया। वहाँ डाक्टरों ने उसकी बीमारी को ल्यूकोमिया–यानी खून का कैंसर बताया। एटम बम की यह बीमारी न जाने पहले ही कितने लोगों को मौत का शिकार बना चुकी थी।

सादाको को अस्पताल में दाखिल कराया गया। उसके दिल में डर था, क्योंकि उसने कितने ही लोगों को इस बीमारी से मरते देखा था। उसके दिल में जीवन की उमंग थी। वह मरना नहीं चाहती थी।

एक दिन उसकी सबसे अच्छी दोस्त चुजूको उससे मिलने आई। वह अपने साथ सफेद कागज के कुछ चौकोर टुकड़े लाई थी। चुजूको ने कागज के एक वर्ग को मोड़कर एक सुदर–सा सारस पक्षी बनाया। उसने सादाको को बताया कि सारस पक्षी हजार साल से भी अधिक जीते हैं और उन्हें जापान में पवित्र माना जाता है। अगर कोई बीमार इंसान एक हजार कागज के पक्षी बनाता है तो भगवान उसकी

मिन्नत मान लेते हैं और उसकी बीमारी ठीक हो जाती है। अब हर रोज सादाको कागज की चिड़ियाएं बनाने लगी। परंतु बीमारी ने उसे बहुत कमजोर बना दिया था। किसी दिन वह बीस चिड़ियाएं बना लेती परंतु किसी दिन वह तीन ही बना पाती। सादाको को मालूम था कि वह ठीक नहीं होगी। फिर भी उसने हजार चिड़ियाएं बनाने का निश्चय किया था।

सोनु सेन, कक्षा–8, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया

एक दिन वह केवल एक ही चिड़िया बना पाई। परंतु वह चिड़िया बनाने का प्रयास तब तक करती रही। जब तक वह पूरी तरह लाचार नहीं हो गई। उसने कुल मिला कर 644 कागज की चिड़ियाएं बनाई। 25 अक्टूबर 1955 को सादाको ससाकी का देहान्त हो गया। उसके मित्रों ने बकाया 356 चिड़ियाएं बनाई। सादाको के दोस्त उसकी बहादूरी और उम्मीद की इज्जत करते थे। सादाको की मौत से उन्हें बेहद गहरा सदमा पहुँचा। उन्होंने पैसे इकट्ठे किए और सादाको की याद में शांति और प्रेम का एक पुतला बनाया। यह स्मारक हिरोशिमा के मध्य में शांति पार्क में स्थित है। यह वहीं स्थान है जहां एटम बम गिरा था। इस पुतले में सादाको को जन्नत के पहाड़ पर खड़ा दिखाया गया है। उसके दोनों हाथ उपर को उठे हैं और वह उनमें शांति के पक्षी को पकड़े है। हर साल, शांति दिवस पर, बच्चे सादाको के स्मारक के नीचे एक हजार चिड़ियाओं की माला बनाकर लटकाते हैं। उनके अरमां स्मारक के नीचे इन शब्दों में अंकित हैं–

यही हमारे आंसू हैं
यही हमारी प्रार्थना है
दुनिया में शांति हो।

स्रोत : विष्णु गोपाल

कान्या मान्या

ओ.... कान्या रै मान्या फुर्र
चालां जोधपुर
ए जी जोधपुर का कबूतरां रै
भाई उड़ता रै फुर्र फुर्र
रै मोटर बोली घुर्र घुर्र,
छोरा बोल्या हुर्र हुर्र
लाग्या रै गण्डकड़ा याऊ.....
लाग्या रै गण्डकड़ा मोटर पाछै
कान्यो बोल्यो घुर्र घुर्र
रै कै कान्या रै मान्या मन्य कै तनै मनै,
कान्या रै मान्या मन्य कै तनै मनै कान्या रै मान्या.....

ए.....
ए जी कान्यो मांगै दूध–राबड़ी
नानी घाली खीर....
जीमण नै जद कान्यो बैठ्यो
करी जिन्दावर सीर
रै भाई ईण मीण करक
कान्या बेटा टरक
ईण मीण करक
कान्या बेटा टरक
ए जी भीतर बैठी बूढ़ी नानी
बाहर आयो जरख
बिल्ली घुर्रराई घुर्र
जरख्या का कान सुर्र
बिल्ली घुर्रराई घुर्र
जरख्या का कान सुर्र
ए जी जोधपुर का चोक मै
जरख्या की पी पी फुर्र
रै क कान्या रै मान्या फुर्र
चालां जोधपुर.....

भूमिका, कक्षा–8, समूह–संगम

ए.....
ए जी कान्यो मांगै खींचड़ी
रै भाई नानी घाली दाळ....
ए जी कान्यो मांगै खींचड़ी
रै भाई नानी घाली दाळ
जीमण नै जद कान्यो बैठ्यो
दाळ में निकळो बाळ....
भाई रै कान्यो गयो रूस
लारै कबूतर सूंस
कान्यो गयो रूस
लारै कबूतर सूंस
ए जी मोर रामजी
ए जी मोर रामजी
करै फैसलो नानी तो कंजूस
रै भाई नानी बोली अर्र
छोड़ दाळ चरपर्र
नानी बोली अर्र
छोड़ दाळ चरपर्र
म्हारा लाल नै...
हे म्हारा लाल नै दूध पिलाऊं
गर्र मर्र गर्र...
रै क कान्या मान्या फुर्र
चालां जोधपुर.....

सुलोचना सेन, उम्र–12, समूह–तिरंगा

प्रियंका, कक्षा–8, समूह–संगम

ए.....
ए जी कान्यो मांगै चूरयो बाटी
नानी घाल्यो सीरो
ए जी कान्यो मांगै चूरयो बाटी
नानी घाल्यो सीरो
उरै नानी जी नै दीख्यो कोनी
सीरा मै पड़गो जीरो
ए जी नानी जी नै दीख्यों कोनी
सीरा मै पड़गो जीरो
कान्यो गयो भाग
नानी कै गई लाग
कान्यो गयो भाग
नानी कै गई लाग
ए जी कान्यो रोवै
भाई नानी दौड़ै
ए जी नानी दौडै
कान्यो रोवै
ए छेड़ै नया जिराग
ए जी छैड़ै रै दीपक राग
रै भाई कान्या रै मान्या फुर्र
चालां जोधपुर
ए जी जोधपुर का कबूतरां रै
भाई उड़ता रै फुर्र फुर्र
रै मोटर बोली घुर्र,
छोरा बोल्या हुर्र,
लाग्या रै गण्डकड़ा याऊ.....
लाग्या रै गण्डकड़ा मोटर पाछै
कान्यो बोल्यो घुर्र...
रै कै कान्या रै मान्या मन्य कै तनै मनै,
कान्या रै मान्या मन्य कै तनै मनै कान्या रै मान्या.....

पलक, कक्षा–8, समूह–संगम

स्रोत – विष्णु गोपाल

माथापच्ची

मनीषा सैनी, उम्र–11 वर्ष, समूह–रंगोली

1. दो या दो से अधिक अंको की संख्या का दो अंको की संख्या से जोड़ करते समय हासिल क्यों लगाई जाती है?

2. दो या दो से अधिक अंकों की संख्या में से दो अंको की संख्या का घटाव करते समय हासिल उधार क्यों ली जाती है?

3. ए और ऐ स्वर के उच्चारण में क्या अंतर है?

(सही जवाब नहीं मिलने पर अपने शिक्षक से समझें।)

मुरारीलाल, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

हीहीही ठीठीठी

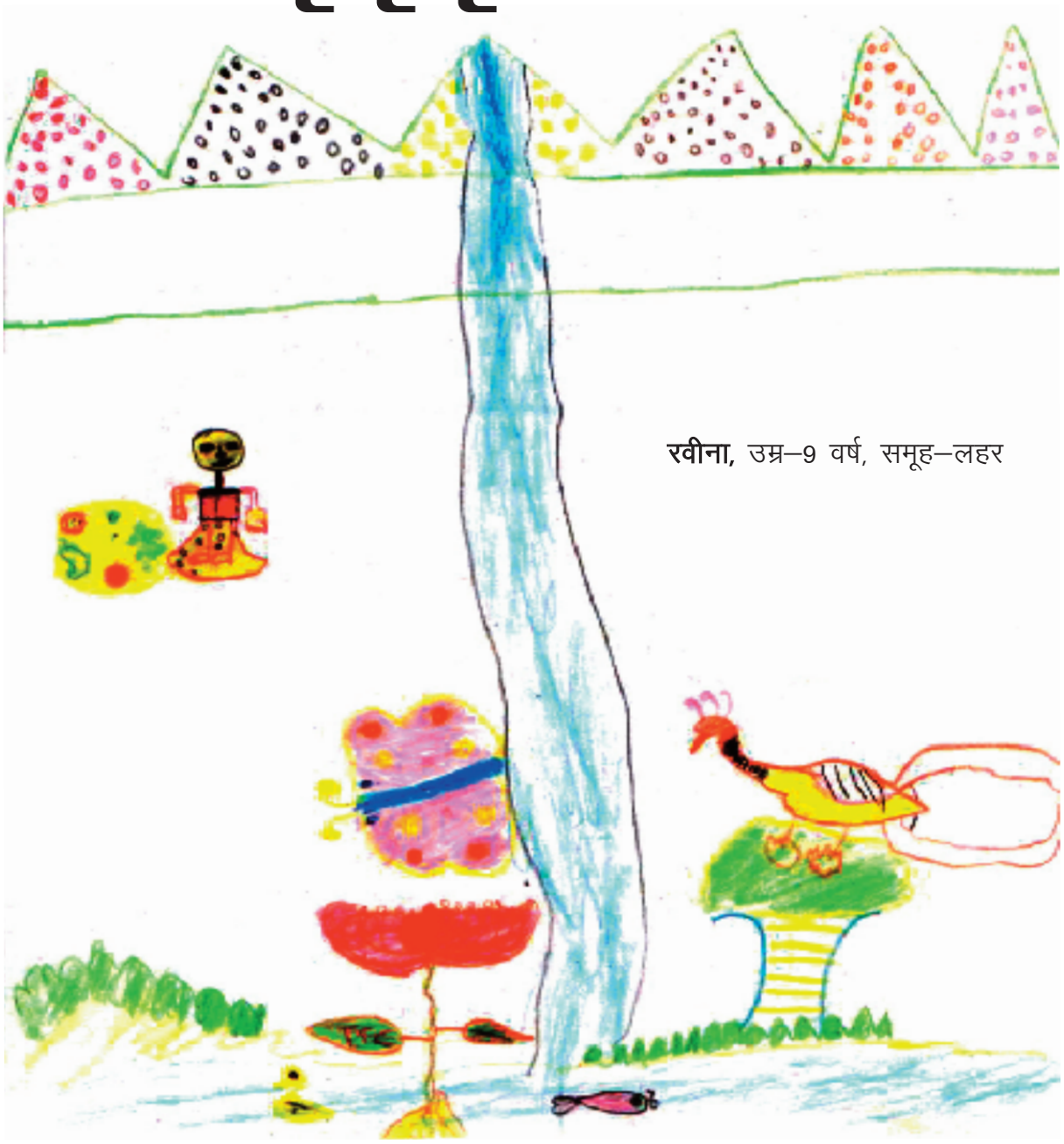

रवीना, उम्र–9 वर्ष, समूह–लहर

1. मास्टर जी एक होटल में खाली कटोरी में रोटी डूबो–डूबो कर खा रहे थे। वेटर ने पूछा – मास्टर जी खाली कटोरी में कैसे खा रहे हो?
मास्टर जी – भईया, हम गणित के अध्यापक हैं, दाल हमने 'मान ली' है।

2. बच्चा विद्यालय में एक काला और एक सफेद मौजा पहनकर आ जाता है।
मेडम – घर जाओ और मौजे बदलकर आओ।
बच्चा – कोई फायदा नहीं मैडम, वहाँ भी एक काला और एक सफेद मौजा ही रखा हुआ है।

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

खुशबू मीना, कक्षा–5, उदय सामुदायिक पाठशाला, जगनपुरा

एक बार कुछ लड़के जंगल में बकरियों को लेकर चराने गये। वे सब जंगल में बहुत आगे तक निकल गये। तभी उन्होंने अचानक शेर की दहाड़ सुनी तो वे सब डर गए। दहाड़ की अवाज सुनकर बकरियाँ इधर–उधर भागने लगी .....

पवन माली, *समूह–उमंग, राजकीय विद्यालय आवासन मण्डल द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

आसमान से बरसे आग
धरती से उड़ती है खाक...

शिक्षक **सुमेर बैरवा** द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।

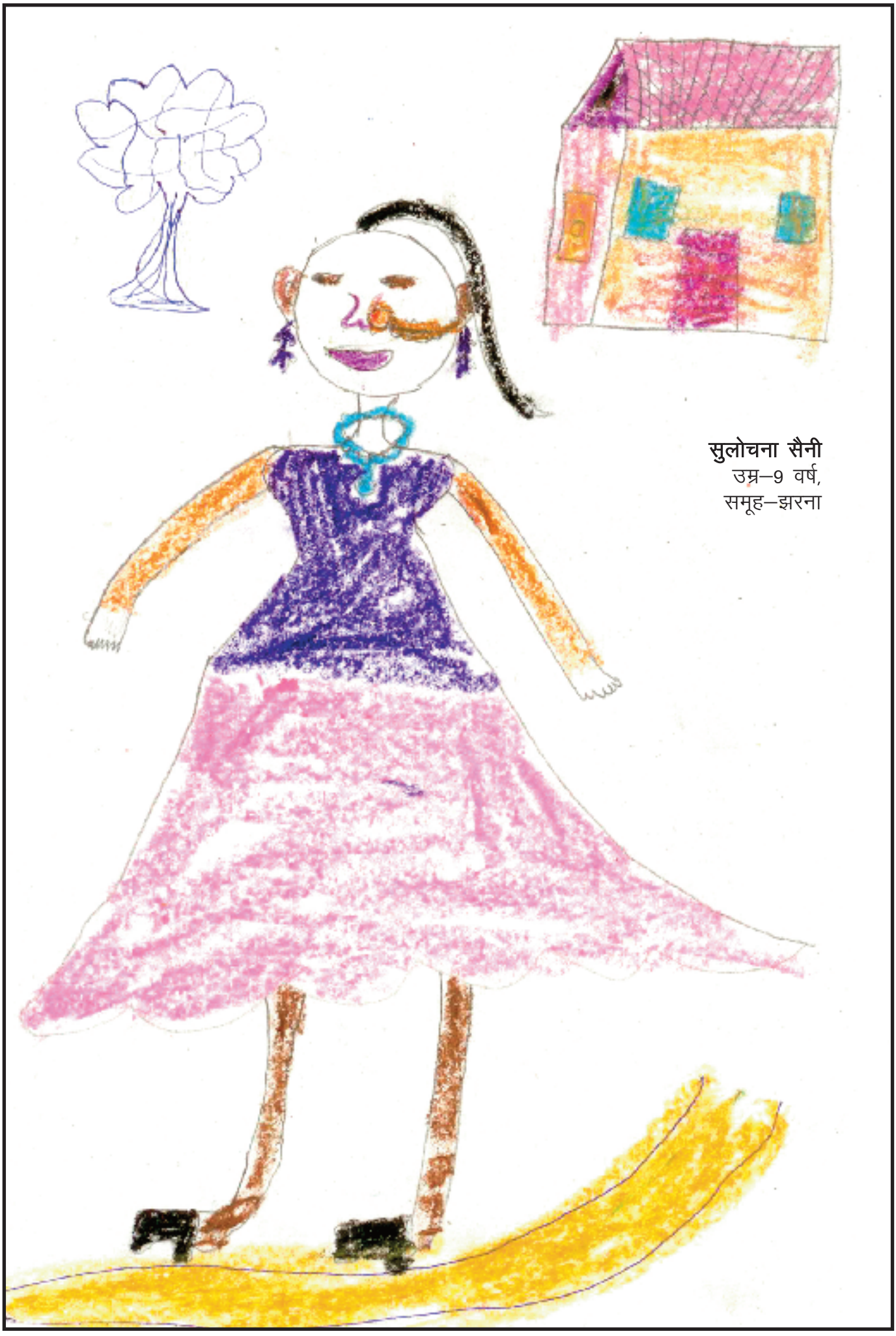

सुलोचना सैनी
उम्र–9 वर्ष,
समूह–झरना